श्री गणधरवलय स्तोत्र

पद्यानुवाद – श्रमणाचार्य विमर्शसागर

जीत लिये सब घाति अघाति, ऐसे श्री जिनेन्द्र भगवान्,
देशावधि, सर्वावधि, परमावधि धारी गुणश्रेष्ठ महान्।
कोष्ठ, बीज, पादानुसारि ऋद्धिधारी श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।1।।

महाऋद्धि संभिन्नश्रोतृ के धारी सब भाषाविद् बुद्ध,
स्वयंबुद्ध, प्रत्येक–बुद्ध, उपदेश प्राप्त जो बोधित बुद्ध।
स्वामी सच्चे मुनियों के शिवमार्ग धर्म के गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।2।।

ऋजु–विपुलमति ज्ञान–मन:पर्यय द्वि–विध इनके धारी,
जो दस पूरब के धारी हैं चौदह पूरब के धारी।
महानिमित्त अष्टांग के ज्ञाता शास्त्रदक्ष जो गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।3।।

महाप्रभावक नाम विक्रिया ऋद्धि के जो हैं धारक,
महाप्रज्ञ, चारण ऋद्धि को प्राप्त, महाविद्या धारक।

सदा मध्य आकाश गमन करनेवाले श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।4।।

आशीविष–दृष्टिविष ऋद्धि धारी हैं जो महाश्रमण,
दीप्तोत्तम–अति उग्र–तप्त तप–ऋद्धि करें जो मुनि धारण।
और महा अतिघोर परम तप धारक हैं जो गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।5।।

लोक पूज्य, देवों से वंदित, घोर गुणों के जो धारक,
जो बुधजन से पूज्य लोक में घोर पराक्रम के धारक।
सम्यक् श्रेष्ठ अघोर ब्रह्म–गुण–धारी जितने गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।6।।

आमर्द्धि, खेलर्द्धि, विडर्द्धि परम जल्ल ऋद्धिधारी,
सर्वऋद्धि को प्राप्त महामुनि पीड़ाहर अति उपकारी।
काय–वचन–मनबल ऋद्धि से युक्त सभी श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।7।।

जो अक्षीण महानस – वर संवास ऋद्धि क्षीरस्रावी,
समीचीन सर्पिस्रावी, मधुरस्रावी, अमृतस्रावी।

अहा! सुशोभित तीन लोक में पूज्य यति श्री गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।8।।

सिद्धालय में राजित जो श्री अतिमहान अतिवीर अहा,
वर्द्धमान ऋद्धि, विशिष्ट बुद्धि ऋद्धि में कुशल महा।
मुक्ति लक्ष्मी वरण करें सब मुनि ऋषिगण या गणधर देव,
उनके गुण की प्राप्ति हेतु करता स्तुति चरणों की सेव।।9।।

सेवित मनुज देव खचरों से, गुण समुद्र, वर ऋद्धिवान्,
कामदेव रूपी हाथी को वश में करने सिंह समान।
जो संसार समुद्र पार करने हैं उत्तम पोत समान,
वन्दित मुनिगण इन्द्र श्री गणधर, मुझे सिद्धपद करें प्रदान।।10।।

गणधर वलय मन्त्र को पढ़ता जो प्रतिदिन विशुद्ध मन से,
आस्रव होता पुण्यकर्म का पाप कर्म निर्जर उनके।
भूत–पिशाच, रोग विष व्याधि दूर सभी होती बाधा,
दिखते स्वप्न शुभाशुभ मृत्यु–समय समाधि मरण पाता।।11।।

हो 'विमर्श' सबके हृदय, कर्मों का हो नाश।
चिदानंद रसपान कर, पाऊँ आत्म निवास।।

(इति श्री गणधरवलय स्तोत्र)